कापरड़ा का साका (1679 ई.): जब 60 राठौड़ शूरवीरों ने रोकी 10,000 मुग़ल फ़ौज

An Authentic Historical Analysis of the Battle of Kaparda (Bilara, Jodhpur)

👤 Author & Archival Details

- **Author / Researcher:** Govind Malviya
- **Brand / Digital Channel:** REAL HI STORY
- **Topic:** 30-Year Rathore-Mughal War (1679–1707 AD) / Battle of Kaparda
- **Publication Date:** July 31, 2026
- **Document Purpose:** Preservation of authentic Marwar history for Internet Archive (archive.org)

दिसंबर 1678 में मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के निधन के बाद मुग़ल सम्राट औरंगज़ेब ने जोधपुर को 'खालसा' (सीधे मुग़ल साम्राज्य के अधीन) घोषित कर दिया। जुलाई 1679 में जब वीर दुर्गादास राठौड़ नवजात राजकुमार अजीत सिंह को दिल्ली से सकुशल निकाल कर मारवाड़ ला रहे थे, तब मुग़ल फ़ौजदार **तहव्वुर ख़ान** 10,000 मुग़ल सैनिकों के साथ उनका पीछा कर रहा था।

मारवाड़ के भावी राजा की रक्षा हेतु जोधपुर-पाली मार्ग पर स्थित **कापरड़ा (बिलाड़ा तहसील, जोधपुर)** के मैदान में **ठाकुर सोनग चंपावत** के नेतृत्व में केवल 60 राठौड़ वीरों ने मुग़ल सेना पर आत्मघाती हमला (साका) कर दिया। इन 60 वीरों ने मुग़ल सेना को **पूरे 12 घंटे** तक रोक कर रखा, जिससे दुर्गादास राठौड़ राजकुमार अजीत सिंह को सिरोही के कालिंद्री गाँव में सुरक्षित पहुँचाने में सफल रहे।

By Govind Malviya (REAL HI STORY)

गहन ऐतिहासिक संदर्भ

1. औरंगज़ेब का षड्यंत्र एवं खालसा घोषणा

महाराजा जसवंत सिंह के निधन के समय मारवाड़ का कोई वयस्क उत्तराधिकारी मौजूद नहीं था। रानियों ने लाहौर में बालक अजीत सिंह को जन्म दिया। औरंगज़ेब ने स्थिति का फ़ायदा उठाते हुए मेहरानगढ़ दुर्ग पर मुग़ल सेना तैनात कर दी और मारवाड़ पर सीधा कब्ज़ा कर लिया।

Govind Malviya (REAL HI STORY)

2. दिल्ली का साहसिक पलायन

वीर दुर्गादास राठौड़ और उनके निष्ठावान साथियों ने दिल्ली के नूराबाद महल से शिशु अजीत सिंह को एक गुप्त योजना के तहत निकाला। औरंगज़ेब ने तुरंत अपने सबसे भरोसेमंद मुग़ल सेनापति **तहव्वुर ख़ान** को भारी तोपखाने और 10,000 घुड़सवारों के साथ पीछे रवाना किया।

3. कापरड़ा की रणनीतिक नाकाबंदी (July 1679)

कापरड़ा (NH-25, जोधपुर-बिलाड़ा मार्ग) वह बिंदु था जहाँ से आगे का रास्ता सोजत, पाली और सिरोही की ओर जाता था। मुग़ल हरावल दस्ता (Vanguard) राठौड़ों के काफ़िले को पकड़ने ही वाला था। By Govind Malviya (REAL HI STORY)

4. 60 बनाम 10,000: कापरड़ा का खौफनाक साका

ठाकुर सोनग चंपावत (हरसोर/चांदसामा) ने दुर्गादास राठौड़ से कहा:

"आप मारवाड़ के दीपक (अजीत सिंह) को लेकर सुरक्षित निकलें। जब तक सोनग और उसके साथियों के शरीर में सांस है, मुग़लों का एक भी घोड़ा कापरड़ा को पार नहीं कर पाएगा!"

60 राठौड़ वीरों ने केसरिया बाना पहनकर रात के अंधेरे में मुग़ल सेना पर सीधा हमला (साका) बोल दिया। सोनग चंपावत का शरीर दर्जनों घावों से छलनी होने के बावजूद वे स्वयं को घोड़े की काठी से बांधकर दोनों हाथों से तलवार चलाते रहे। इन 60 वीरों के पराक्रम के कारण मुग़ल सेनापति तहव्वुर ख़ान को लगा कि सामने राजपूतों की मुख्य सेना है, जिससे मुग़ल फ़ौज 12 घंटे तक वहीं उलझी रही।

Govind Malviya (REAL HI STORY)

📚 Primary & Academic References (प्रामाणिक स्रोत)

यह ऐतिहासिक दस्तावेज़ निम्नलिखित प्राथमिक एवं अकादमिक ग्रंथों के साक्ष्यों पर आधारित है:

1. **जोधपुर राज्य का इतिहास (भाग 2, पृष्ठ 482–486)**
    - *लेखक:* महामहोपाध्याय डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा

संदर्भ: औरंगज़ेब द्वारा जोधपुर को खालसा करने, तहव्वुर ख़ान के आक्रमण और कापरड़ा में चंपावतों के साके का विस्तृत विवरण। By Govind Malviya (REAL HI STORY)

2. **मारवाड़ री ख्यात (भाग 2, पृष्ठ 54–58)**
    - *संपादक:* बदरीप्रसाद साकरिया (राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर)
    - *संदर्भ:* ठाकुर सोनग चंपावत और उनके 60 राठौड़ साथियों का नामज़द ऐतिहासिक रिकॉर्ड।
3. **अजीत ग्रंथ (सर्ग 4, श्लोक 32–45)**
    - *रचयिता:* कवि देवकर्ण (समकालीन संस्कृत काव्य, 17वीं शताब्दी)
    - *संदर्भ:* कापरड़ा युद्ध में राठौड़ों के पराक्रम और मुग़ल फ़ौज के रुकने का वर्णन।
4. **मासिर-ए-आलमगीरी (पृष्ठ 110–112)**
    - *लेखक:* साकी मुस्तैद ख़ान (अनुवाद: सर जादुनाथ सरकार)
    - *संदर्भ:* मुग़ल अभिलेखों में जोधपुर के फ़ौजदार तहव्वुर ख़ान द्वारा मारवाड़ में सामना किए गए कड़े प्रतिरोध का आधिकारिक विवरण।

© 31st July 2026, Govind Malviya (REAL HI STORY).

Archival Edition preserved for educational and historical research purposes on Internet Archive (archive.org).